गाँधी के स्वदेशी आन्दोलन में खादी की भूमिका

श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

lkjka'k *शांति, समन्वय, स्नेह, सहिष्णुता, सद्भाव और सदाचार के अग्रदूत, अहिंसा और सत्याग्रह के व्यावहारिक व्याख्याता, वैयक्तिक सम्पूर्णता के प्रतीक, सामाजिक एवं राजनीतिक समग्रता के प्रवर्तक, भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन के पुरोधा, बंधनमुक्त मानवता एवं शान्तिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के समर्थक और एक साधक की जिन्दगी जीते हुए मनुष्य से महात्मा की उपाधि प्राप्तकर्ता मोहनदास करमचन्द गांधी भारत भूमि की विशिष्टतम् विभूति हैं और वैश्विक मानवता की अक्षय निधि हैं। इन्होंने स्वराज प्राप्ति के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया है। इनमें सर्वाधिक सशक्त साधन था विदेशी वस़्त्रों का बहिष्कार। अपने आन्दोलनों की सफलता के लिए गाँधी जी ने स्वदेशी वस्त्रों के प्रयोग और निर्माण पर बल दिया तथा इसके लिए चरखे के प्रयोग एवं खादी -वस्त्रों के विनिर्माण पर बल दिया। अधोलिखित शोध पत्र में स्वदेशी आन्दोलन में गाँधी जी के दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए उस आन्दोलन की सफलता के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त खादी वस्त्र के इतिहास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता में उसके योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।*

प्रस्तावना

भारत का राष्ट्र धर्म है स्वदेशी की प्रतिष्ठा। उसके माध्यम से ही भारत के विभिन्न समुदायों की बौद्धिक प्रतिभा, ज्ञान-विज्ञान, परम्पराएँ, न्याय-बुद्धि, धर्म-बोध, कौशल तथा राजनीतिक सामर्थ्य प्रकट तथा विकसित होती रही है तथा हो सकती है, चाहे वे समुदाय किसी भी धर्म-मत में आस्था रखते हों। स्वदेशी का अर्थ है – अपना देश। राजनीतिक क्षेत्र में गाँधी जी के राष्ट्रवाद का आधार इसी से बना है। यह प्रबुद्ध देशभक्ति का सिद्धान्त है, जो पड़ोसियों के प्रति हमारे कर्त्तव्यों को सीमाबद्ध कर देता है। गाँधी जी ने स्वदेश की अवधारणा को अति व्यापक अर्थ प्रदान किया है। 'स्वदेशी' वह भावना है जो हमें दूर के बजाय अपने आस-पास के परिवेश के ही उपयोग और

सेवा तक सीमित रखती है।[1] वह केवल आर्थिक क्षेत्र में स्वदेश निर्मित वस्तुओं के प्रयोग मात्र तक सीमित नही है। गाँधी जी ने 'स्वदेशी' को स्वराज की पूर्व अवधारणा बताया है और इसे उन्होंने स्वशासन एवं आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय सरकार तथा राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता को परस्पर जोड़ने वाली कड़ी की संज्ञा दी है। उनके अनुसार 'स्वदेशी' हमारे अन्दर निहित वह भावना है जो हमें अधिक दूरस्थ से हटाकर अपने निकट के वातावरण से लाभ एवं उपयोग उठाने तक सीमित रखती है। ''मैं स्वदेशी को सभी के द्वारा पालन किए जाने वाला धार्मिक सिद्धान्त मानता हूँ''।

इस तरह से स्वदेशी एक उच्चस्थ आध्यात्मिक प्रकार की सर्वतोमुखी देशभक्ति है। स्वदेशी की मांग है कि हम अपने देश के आदर्शों एवं संस्थाओं से दृढ़तापूर्वक जुड़े रहें। विशुद्ध सेवा भावना 'स्वदेशी' का सार है। स्वदेशी कभी भी समूहों की अनैतिकता, संकीर्णता एवं निहित स्वार्थ की वृद्धि में विश्वास नहीं करता। भारत के संदर्भ में गाँधी जी कहा करते थे कि –''एक सच्चा स्वतंत्र भारत अपने संकट ग्रस्त पड़ोसियों की सहायता के लिए दौड़ कर पहुँचने के लिए बाध्य है। स्वदेशी का सिद्धान्त सेवा हेतु मानवीय क्षमता की वैज्ञानिक सीमाओं को स्वीकार करता है। वस्तुतः गाँधी जी इसे गीता की शिक्षाओं पर अवलम्बित मानते हुए बताते हैं कि अपने कर्त्तव्यों के (स्वधर्म) पालन करते हुए मर जाना श्रेष्ठ है तथा दूसरों के कर्त्तव्यों (पर धर्म) को करना विपदापूर्ण है।

स्वदेशी, अर्थात् जो करीब या पड़ोस में है, उसका उपयोग तथा सेवा के सिद्धान्त पर आधारित सामाजिक व्यवस्था, स्वदेशी मूलभूत रूप से अहिंसक व्यवस्था है, जो सृष्टि के सनातन नियमों का उल्लंघन नहीं होने देती। गाँधी जी ने स्पष्ट कहा था कि स्वदेशी के बिना हिन्दू धर्म मृत शरीर के बराबर है। स्वदेशी सिद्धान्त वास्तव में घरेलू उद्योगों के इस रूप में संरक्षण प्रदान करता है कि उनमें विकास करने की निश्चित शक्ति विद्यमान रहे। स्वदेशी का अर्थ किसी दूसरे देश के प्रति दुर्भाव कदापि नहीं है। गाँधी के शब्दों में, ''यह किसी भी दृष्टि से संकीर्ण नहीं है क्योंकि जो कुछ भी मेरे विकास के लिए आवश्यक है, वह मैं संसार के किसी भी भाग से ले लूँगा। मैं संसार के किसी भाग से ऐसी कोई वस्तु लेने को तैयार नहीं चाहे वह कितनी ही सुन्दर हो जो मेरे विकास में बाधक हो और उन लोगों को हानि पहुँचाये जिनकी भलाई मेरी प्रकृति में पहली चिंता का विषय है''।[2]

स्वदेशी की इस व्यापक धारणा को स्वयं गाँधी जी ने प्रतीकात्मक रूप से आम जनता को समझाने के लिए ''खादी'' का रूप दिया। खादी का संदेश वे स्वयं नियमित रूप से चरखा चलाकर देते थे तथा सभी आश्रमवासियों एवं अनुयायियों को नियमित रूप से चरखा चलाने के लिए कहते थे। गाँधी जी के लिए चरखे का संगीत 'आत्मा की आवाज' था। उन्होंने खादी को भारतीय एकता का प्रतीक बना दिया और उसे खद्दर के रूप में पहनाकर सबको राष्ट्रीय वेशभूषा से सुसज्जित कर दिया। गाँधी

जी के अनुसार खादी भी स्वदेशी की प्रतीक थी। गाँधी जी का खादी के बारे में कहना हैः –

1. खादी मनोवृत्ति का अर्थ जीवन की आवश्यकताओं के उत्पादन एवं वितरण का विकेन्द्रीकरण है।
2. इसके लिए रूचि एवं मनोवृत्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।
3. इसका अर्थ समग्रात्मक स्वदेशी मनोवृत्ति है। वह भारत में ही जीवन की समस्त आवश्यकताओं को प्राप्त कर लेने का संकल्प है तथा उसे ग्रामवासियों की श्रम एवं बुद्धि के द्वारा प्राप्त किया जाता है।
4. भारी उद्योग आवश्यक रूप से केन्द्रीयकृत एवं राष्ट्रीयकृत होंगे लेकिन वे गाँवों में व्यापक राष्ट्रीय गतिविधियों के न्यूनतम अंश बन सकेंगे।

स्वदेशी तो शाश्वत धर्म है। उसका व्यवहार हर युग में बदलता ही रहेगा और बदलना भी चाहिए। स्वदेशी आत्मा है और भारत में इस युग के लिए खादी उसका शरीर है। समय पाकर उसकी इस देह का नाश होना हो, तो भले ही हो। तब वह दूसरी तथा नवीन देह धारण कर लेगा पर अंतर में स्थित आत्मा तो वही होगा। स्वदेशी एक सेवा धर्म है। इस सेवा धर्म को यदि हम पूरी तरह समझ लें, तो हमारा हमारे परिवार का, देश का और सारे संसार का कल्याण होगा। स्वदेशी में स्वार्थ नहीं, शुद्ध परमार्थ है, इसलिए मैं उसे यज्ञ मानता हूँ।[3]

स्वदेशी की सफलता हेतु गाँधी जी ने खादी को एक अस्त्र के रूप में चुना और इसे जन-जन तक पहुँचाने में सफल भी रहे परन्तु खादी की परम्परा का इतिहास केवल आधुनिक भारत से नहीं जुड़ा है। यह रवायत सैन्धव सभ्यता में भी विद्यमान थी। सैन्धव सभ्यता की अर्थव्यवस्था पूर्णतः कृषि एवं पशुपालन पर केन्द्रित थी। तत्कालीन भारत में विविध प्रकार के उद्योग विकसित थे। उत्खनन के दौरान पुरातत्त्ववेत्ताओं को मिले साक्ष्य इस तरफ संकेत करते हैं, उस समय वस्त्र उद्योग का विकास हो चुका था। जहाँ दयाराम साहनी को चाँदी के एक कलश में कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, वहीं डॉ. मैके को अनेक वस्तुओं में लिपटे हुए धागे प्राप्त हुए हैं। सिन्धु प्रदेश में पटुए के अवशेष भी प्राप्त हुए है। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि पूर्व वैदिक काल तक भारत में वस्त्र उद्योग की नींव मजबूत हो चुकी थी।[4]

वैदिक वाङ्मय से ज्ञात होता है कि वैदिक ऋषि कपड़ा बुनने में दक्ष थे। ऋग्वेद में वैदिक मानवों (आर्यों) द्वारा वस्त्र को चुनने के सन्दर्भ में सात उपदेशों का उल्लेख है।[5]

तंतुतन्वन्, रजसोभानुमन्विर्हि ज्योतिशमतः पथो रक्षधियाकृ
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनयादैव्यम् जनम्।।

अर्थात् सूत कातो, उस पर रंग चढ़ाओं, उसका कपड़ा बुनो, इससे लोगों के

स्वास्थ्य की रक्षा करो, मननशील बनो, प्रजा उत्पन्न करो, यह समस्त कार्य हीन कार्य न होकर श्रेष्ठ कवियों के समान है। ऋग्वेद के कुछ मंत्रों माता-पिता द्वारा अपने पुत्र के लिए वस्त्र बुनने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।[6] अथर्ववेद में पत्नी द्वारा पति के लिए कपड़ा बुनने का प्रमाण मिलता है।[7] इस प्रकार इन मन्त्रों से प्रमाणित होता है कि तत्कालीन भारतीय समाज में कपड़ा बुनना घरेलू कार्य था और इसे श्रेष्ठ कार्य समझा जाता था। पूर्व मध्यकाल में भी कपड़ा की बुनाई के विषय में साक्ष्य मिलते हैं। एक प्रसंग है कि राजा भोज के दरबार में एक बुनकर आया और उसने राजा से कहा *''हे भोजराज कवयामि वयामि यामि''*।

मध्यकाल में भी खादी को किसी तरह की कोई हानि नही पहुँची। अकबर के शासन काल में खादी अपना गौरव बनाए हुए था। बादशाह अकबर को एक जुलाहे कारीगर ने बहुत उन्नत किस्म का खादी का थान एक बाँस की छोटी सी नली में रखकर दिया था। वह थान इतना लम्बा चौड़ा था कि उससे एक हाथी बखूबी ढाँका जा सकता था।[8] इस काल में बंगाल के ढाके का मलमल का कपड़ा विश्व प्रसिद्ध था। भारत में इतना अच्छा वस्त्र तैयार होता था जितना कि उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप की मशीनें भी नहीं बना सकती थी।[9] *एनसायक्लोपीडिया आफ ब्रिटेनिका* के अनुसार ''यूरोप की पूर्ण मशीनें भी अभी तक भारतीय करघों से अच्छा सूत या वस्त्र नहीं निकाल सकी है। प्रकृति ने ही भारत को इस विषय की विविध सुविधाएँ प्रदान की हैं।[10]

आधुनिक काल में भारत में अंग्रेजी शासन काल के दौरान खादी को पराभव का मुँह देखना पड़ा। अंग्रेजों ने भारतीय वस्त्र उद्योग को नष्ट कर दिया। इन दिनों भारत से खादी का नाम उठ सा गया। इंग्लैण्ड के मैनचिस्टर और लंकशायर के बने कपड़ों से पूरा भारत भर गया। प्राचीन काल से अब तक खादी ने विश्व में अपना जो गौरव बनाए हुए था उसे पूरी साजिश के तहत अंग्रेजों ने समाप्त कर दिया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी के आने के पूर्व ही 'चरखा' और 'खादी' को लोककप्रियता मिल चुकी थी। 'चरखा' तथा 'खादी' दोनों ही अंग्रेजों के विरूद्ध चलाए जा रहे प्रतिक्रियावादी आन्दोलन के मूल में थे। दिसम्बर 1903 में अंग्रेजों ने बंगाल-विभाजन की सार्वजनिक घोषणा की। भारतीयों के विरोध के बावजूद जुलाई 1905 में 'बंगाल विभाजन' की घोषणा कर दी गई। इस घोषणा के तत्काल बाद बंगाल में विरोध सभाएँ आरम्भ हुई। इन सभाओं में सबसे पहले विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का निर्णय किया गया। 7 अगस्त 1905 को बंगाल-विभाजन के विरोध में कलकत्ता के टाउनहाल में एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया और यही से स्वदेशी आन्दोलन को प्रारम्भ करने की घोषणा की गई। इसके पश्चात् मैनचिस्टर में बने कपड़ों तथा लिवरपुल के बने नमक का बहिष्कार करने का आग्रह किया गया। 16 अक्टूबर 1905 को जब बंगाल विभाजन विधिवत् लागू हुआ तो उस दिन को शोक दिवस के रूप में मनाया गया। लोगों ने व्रत रखा, वन्दे मातरम गीत गाया। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा आनन्द मोहन बोष ने एक विशाल जनसभा को सम्बोधित किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन की अब तक की

यह सबसे बड़ी जनसभा थी। स्वदेशी आन्दोलन के दौरान लोगों से जिन महत्वपूर्ण मुद्दें पर सहयोग करने की मांग की गयी वह थीः–

1. चरखा को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाना।
2. स्वेदशी मेले का आयोजन करना।

जनवरी 1915 में गाँधी जी भारत आ गए। दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा किए गए आन्दोलनों की सफलता ने भारत में उन्हें काफी लोकप्रिय बना दिया था बावजूद इसके उन्होंने लगभग दो वर्षों तक भारत आगमन के पश्चात् किसी भी आन्दोलन में हिस्सा नहीं लिया। चम्पारन सत्याग्रह (1917) उनका पहला आन्दोलन था। अहसयोग की शुरूआत 1920 में हुई। सितम्बर 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित हुआ। इस अधिवेशन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, खादी का प्रयोग और चरखा के प्रयोग को प्रोत्साहन देने का संकल्प लिया गया। नागपुर अधिवेशन (दिसम्बर 1920) में गांवों में 20 लाख चरखे स्थापित किए जाने का संकल्प लिया गया। इस प्रकार गाँधी जी के भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश करने के पश्चात् खादी और चरखे को जन-जन तक पहुँचाने में कांग्रेस के द्वारा इस क्षेत्र में प्रयास पहले से किया जा रहा था परन्तु इसे लोकप्रियता गाँधी जी के आने के बाद ही मिल सकी।

गाँधी जी की दृष्टि में ''खादी केवल वस्त्र नहीं है अपितु विचार है''। गाँधी जी के द्वारा खादी और चरखे का प्रयोग राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान करने के पीछे लोगों को आत्मनिर्भर बनाना उद्देश्य था। उनका यह मानना था कि तुम तब तक सुखी नहीं हो सकते जब तक तुम्हारा समाज सुखी न हो। कदाचित यही कारण था कि गरीबी मिटाने के निमित्त पहले विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और पुनः खादी के वस्त्र अथवा स्वदेशी वस्त्र के निर्माण पर बल दिया। निःसन्देह इसमें आत्मनिर्भर का पुट था। पूरे राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान गाँधी जी ने खादी को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया और स्वतन्त्रता के पूर्व ही नहीं वरन् बाद में भी 'खादी' को भारत को ट्रेड मार्क बना दिया।

महात्मा गाँधी ने जब स्वदेशी का अलख जगाया तो उनकी इस अवधारणा के विरूद्ध बहुतों ने शंका व्यक्त की। शंका व्यक्त करने वालों में रवीन्द्र नाथ टैगोर भी थे। गांधी जी के 'चरखा अभियान' और 'स्वदेशी' को अन्तर्राष्ट्रीय लाभों से भारत को वंचित रखने वाला अवैज्ञानिक अभियान बताते हुए उन्होंने 'माडर्न रिव्यू' नामक पत्रिका में 'सत्य की पुकार' शीर्षक से एक लेख लिखा था। इस लेख में टैगोर ने मशीनों की वकालत की थी और चरखा कातने को जबरन हर किसी पर थोपने का विरोध किया था।

सी.एफ. एण्ड्रयूज के अनुसार – ''खादी हमें बेकारी की समस्या का तात्कालिक, व्यावहारिक तथा स्थायी समाधान प्रदान करती है। कृषि की पूरक किसी अन्य उपयुक्त वृत्ति के अभाव में जिसके परिणाम स्वरूप लोगों में दीर्घकालीन भुखमरी है''। खादी के पुनरूद्धार से ही अन्य सम्बद्ध घरेलू उद्योगों का भी पुनरूद्धार हो सकता है। गाँधी के अनुसार ''करोड़ों भूखे लोग आज एक ही कविता की मांग कर रहे हैं – भूख मिटाने

वाली भोजनरूपी कविता की। लेकिन वह उन्हें कोई नहीं दे पा रहा है। उन्हें अपने भोजन स्वयं प्राप्त करना है और वे प्राप्त कर सकते हैं सिर्फ अपने भाल से पसीना बहाकर''। इन श्लोकों में इस लेख द्वारा चरखे का समस्त साहित्य निहित है – उस चरखे का, जिसे चलाना मैं आज के भारत के लिए एक अनिवार्य यज्ञ मानता हूँ। अगर हम अपना वर्तमान ठीक कर लेते हैं, तो हमारे भविष्य की चिन्ता भगवान करेगा ही।[11]

इस प्रकार स्पष्ट है कि खादी के माध्यम से स्वदेशी को सफल बनाने और पुनः स्वराज की प्राप्ति में गाँधी जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। आजादी के बाद भी यह प्रासंगिक है। तभी तो द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान खादी तथा ग्रामोद्योग की स्थापना खादी और ग्रामोद्योग अधिनियम 1956 के द्वारा हुई। यह लघु, कुटीर एवं मध्यम उपक्रम, भारत सरकार के अधीन है। इसका मुख्यालय मुम्बई में है, जबकि अन्य संभागीय कार्यालय दिल्ली, भोपाल, बगंलुरु, कोलकत्ता और गुवाहटी में स्थित हैं। संभागीय कार्यालयों के अलावा अपने विभिन्न कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करने के लिए 28 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में भी इसका कार्यालय है। भारत जैसे श्रम अधिशेष वाले देश के लिए खादी एवं ग्रामीण उद्योग रोजगार का प्रमुख साधन है। खादी ग्रामीण गरीबों के लिए एक आर्थिक रूप से व्यवहार्य विकल्प बनाता है। कम आय, एवं क्षेत्रीय और ग्रामीण एवं नगरीय असमानताओं के कारण भारत के सन्दर्भ में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। खादी ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराकर लोगों को आत्मनिर्भर बनाया है तथा सुदृढ़ ग्रामीण सामाजिक भावना का निर्माण किया है। इस प्रकार आज भी गाँधी जी के सपने को साकार करने का प्रयास किया जा रहा है।

संदर्भ

1. मद्रास में 'स्वदेशी' पर भाषण, 14 फरवरी, 1916
2. D.G. Tendulkar, Mahatma, Vol. VII
3. नवजीवन (गुजरात), 19.6.1927
4. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग-एक, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. 34
5. ऋग्वेद, 10/130/1
6. ऋग्वेद, 5/47/6
7. अथर्ववेद, 14/2/51
8. गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इन्द्र', खादी का इतिहास, हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस, 1923, पृ. 39
9. Mearim, Ancient and Medieval India, Vol. I, p.395
10. इनसाक्लोपीडिया आफ ब्रिटेनिका, पृ. 446
11. यंग इण्डिया, 13.10.1921